मन के दस कमरे

आनुवंशिकी — उद्गम

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

आनुवंशिकी — उद्गम

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

मैंने आईने में देखा। मुझे लगा मैं ख़ुद को देख रहा हूँ। फिर मुझे कुछ और दिखने लगा। मेरे पिता। मेरे दादा। उनकी ख़ामोशियाँ। उनकी ज़िद। उनके डर। उनका अनुशासन।

पर मुझसे एक भूल हुई। मैंने अपनी माँ को ढूँढ़ने में उतना वक़्त नहीं लगाया जितना लगाना चाहिए था। वह औरत, जो मुझे इस दुनिया में लाई। मैंने उसे सिर्फ़ अपने चेहरे में तलाशा। आनुवंशिकी अलमारियों के बिना एक पुस्तकालय है। माँस-मज्जा में लिखा हुआ एक अभिलेख। हर भंगिमा में कुछ निशान छिपे होते हैं। हर प्रतिक्रिया कोई न कोई याद सँजोए रखती है। हम अपने भीतर ऐसी लड़ाइयाँ ढोते हैं जो हमने कभी लड़ी ही नहीं। ऐसे डर जो हमने कभी सीखे नहीं। ऐसी ताक़तें जिनका स्रोत हम बता ही नहीं सकते। हम कभी कोई नितांत शुरुआत नहीं होते। हम एक निरंतरता होते हैं। हम अपने नाम से कहीं बड़ी किसी कहानी का अगला अध्याय होते हैं। फिर मैंने कुछ समझा। सबसे अहम विरासत चेहरे-मोहरे में नहीं लिखी थी। न आँखों में। न चेहरे की बनावट में। वह लिखी थी कर्मों में। मुश्किलों का सामना करने के उस चुपचाप ढंग में। बिना शोर मचाए सह जाने की उस क़ुव्वत में। और वहीं, आख़िरकार, मुझे अपनी माँ दिखने लगी। आईने में नहीं। बल्कि हर उस बार, जब मैंने बिना दुनिया को जताए हार न मानने का फ़ैसला किया।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।